

Regarding reported deaths of labourers from Bihar

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): सभापति महोदय, मैं आज बिहार के 14 करोड़ लोगों का दर्द उठाने के लिए, उनका विषय उठाने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मुझे विश्वास है कि भारत के 140 करोड़ लोगों की संवेदना इस विषय के साथ होगी।

महोदय, इस देश में कहीं एक मौत हो जाती है तो लोग चिंता व्यक्त करते हैं। तीन दिन पहले कर्नाटक के विजयपुरा जिले में सात मजदूर, जो हमारे यहां बेलदार कहलाते हैं, उनकी मौत हो गयी। एक फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में मक्के के ढेर लगे हुए थे, उसमें उनकी मौत हो गयी। आप इसका अनुमान लगाइए। मैं उनकी चीख लेकर, बिहार के गरीबों की चीख लेकर इस सदन में आया हूँ। वहां गोदाम में बोरे गिरने से सात मजदूर चीख-चीख कर मर जाते हैं। आप अनुमान लगाइए कि कैसी व्यवस्था रही होगी। ये हमारे बिहार के मजदूर हैं। ये बेलदार थे, जो बोरियां उठा-उठा कर रखते थे। वे एक ही जाति के थे। हम लोग यहां सदन में देश के भविष्य के बारे में और नौजवानों की बात करते हैं। उनकी आयु क्या थी? एक की आयु 18 वर्ष थी, दूसरे की आयु 20 वर्ष थी, तीसरे की आयु 33 वर्ष थी, चौथे की आयु 44 वर्ष थी। इसमें मरने वाले कौन-कौन हैं? एक का नाम राजेश मुखिया है, जो पिछड़े समाज से आते थे, खगड़िया से थे। उसमें शम्भु मुखिया बेगूसराय के थे, रामबृज समस्तीपुर के थे। आप इन गरीबों में पूरे बिहार का नक्शा देखिए। कृष्णा बेगूसराय से थे, लोकू यादव पटना के निकट के थे। दुलार चन्द बेगूसराय के थे, राम बुध मुखिया समस्तीपुर के थे।

महोदय, मैं इन गरीबों की पहचान नहीं बताना चाहता, बल्कि ये सब पिछड़े समाज के थे, जिस समाज की दुहाई बिहार सरकार लगातार देती रहती है, जिन गरीबों के वोट के सहारे लगातार पिछले 35 वर्षों से शासन कर रही है। पूरे भारतवर्ष में यही कहानी है। पुणे में स्लैब गिरता है तो वहां मरने वाला मजदूर बिहारी है। बेंगलुरु के सेप्टिक टैंक में सफाई करने वाला मजदूर बिहारी है। दिल्ली की मंडी में आग लगती है। उसमें 36 लोग जल कर मर जाते हैं। वह मजदूर बिहारी है। पंजाब के लुधियाना में खेत में काम करके अपने घरों में सोने वाले मजदूर बिहारी हैं। हैदराबाद की प्लास्टिक फैक्ट्री में आग से मरने वाला बिहारी है। कश्मीर की घाटियों में वे अपना पेट भरने जाते हैं, वहां खोमचे लगाते हैं और आतंकियों की गोली से मरने वाला भी बिहारी है।

महोदय, मैं इस विषय को इसलिए उठा रहा हूँ कि इसके साथ पूरे सदन की संवेदना होगी। बिहारी आगे है, पर बिहार पिछड़ा है। यह क्यों है? यह एक सवाल है। इसी सवाल के साथ इन मरने वाले मजदूरों की आवाज और चीख लेकर मैं यहां आया हूँ। मैं बिहार से हूँ। बिहार की 14 करोड़ आबादी में से किसी को यह बात स्वीकार करने में कठिनाई होती है कि 4 करोड़ लोग बिहार छोड़ कर चले गए हैं। उस 4 करोड़ में से तीन करोड़ वे लोग गए हैं, जिसकी जातीय जनगणना बिहार की सरकार कराती है और जिनके वोट की राजनीति करती है।

महोदय, मैं इस विषय को इसलिए उठा रहा हूँ कि यह गिनती का धोखा है। आज मैं यहां से मांग करता हूँ। यहां पर हमारे बहुत मित्र बैठे हैं, मलूक साहब बैठे हैं, बेगूसराय के हमारे पुराने मित्र बैठे हुए हैं, अहलुवालिया साहब बैठे हैं, केरल के हमारे मित्र बैठे हैं।

महोदय, पूरे भारत में बिहार के मजदूर गरीबी की हालत में काम करते हैं। आप ट्रेनों में इनकी हालत देखिए। मैं कर्नाटक सरकार से कहूंगा कि दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। मैं उन मजदूरों के लिए कर्नाटक सरकार से दस लाख रुपये के मुआवजे की मांग करता हूं। बिहार की सरकार से मैं मांग करूंगा कि हर मरने वाले मजदूर को एक-एक करोड़ रुपये दिए जाएं। मैं यह भी मांग करूंगा कि आने वाले दिनों में अगर देश में कोई भी मजदूर मरता है तो उसे एक-एक करोड़ रुपये दिये जाएं, क्योंकि ये चार करोड़ लोग, जो बिहार से बाहर पूरे भारत में रहते हैं, ये बिहार सरकार का खर्च चलाते हैं। मेरी बिहार सरकार से मांग है कि उन्हें मुआवजा दिया जाए। मैं पूरे भारत की इस संसद में यह विषय उठाना चाहता हूं कि आपकी संवेदना उस गरीब बिहारी के साथ होनी चाहिए, जिसकी बात मैं उठा रहा हूं।? (व्यवधान)

अगर सदन सहमत है तो ताली बजाकर सहमति व्यक्त करें।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : नहीं, नहीं, ऐसी अपील नहीं करनी चाहिए।